International Conference on Multidisciplinary Perspectives in Advanced Computing and Technology (IMPACT 2026)
G. B. Pant University of Agriculture and Technology, Uttarakhand, India. Jan. 10-11, 2026

इक्कीसवीं सदी के समकालीन युग में अनामिका और कात्यायिनी की हिंदी कविताओं में ग्रामीण बोध एवं लोक संस्कृति

वंदना नौटियाल[1], डॉ. निधि उप्रेती[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, माया देवी यूनिवर्सिटी, देहरादून

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, माया देवी यूनिवर्सिटी, देहरादून

vandanadobhal85@gmail.com[1], nidhi.upreti@maya.edu.in[2]

प्रस्तावना:

आधुनिक युग में स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवाद एवं नारी सशक्तिकरण की चर्चा चारो ओर है। वर्षो से होते आये स्त्री शोषण ने ही स्त्री विमर्श की ओर ध्यान आकर्षित किया है। विभिन्न लेखकों ने स्त्री चेतना को अपनी कविताओं का विषय बनाया परंतु जिस प्रकार नारी संवेदना को महिला लेखिकाओ ने नारी मन की भावना को उकेरना शुरू किया वह स्त्री विमर्श नारी के आत्मागौरव और सम्मान का उल्लेखनीय उदारण प्रस्तुत करता है। स्त्री, दलित, आदिवासी, वृद्ध विमर्श आज भी साहित्य के शोध केंद्र में नहीं है। विमर्श का अर्थ है किसी विषय के बारे में सोचना और विचार करना। इस दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री विमर्श नारी से संबंधित सभी मुद्दों को सोचने समझने और विचार करने वाला चिंतन है। नौवीं शताब्दी में आते आते स्त्री विमर्श ने विद्रोहात्मक रूप धारण कर लिया और इक्कीसवी सदी तक आते आते स्त्री विमर्श साहित्य, संगोष्ठी और शोध के केंद्र में भी छा गया। आधुनिक युग में नारी विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारी वाद और नारी शशक्ति करण का शोर चारो तरफ है। इस शोध पत्र की प्रस्तुति समाज को स्त्री की स्थिति और अस्तित्व के प्रति जागरूक करना और उसकी चिंता के लिए समाज को जागरूक करना, पुरुषो के समान इंसान को समझना और उसके दुख दर्द के कारणों को समाज को समझाना है।

मुख्य शब्द: स्त्री विमर्श, अस्तित्व, आत्मसम्मान, विद्रोहात्मक रूप, नारी सशक्तिकरण

1. समकालीन युग में अनामिका हिंदी कविताओं का स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवाद एवं नारी शशक्तिकरण में प्रभाव:

अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श के अलग-अलग पक्ष हमको देखने को मिलते हैं। अनामिका अपनी कविताओं में बीच बीच में अपने शब्द से खेलती है। अपनी कविताओं में गपशप की शैली को

© The Author(s), under exclusive license to Digital Manuscriptpedia. 2026 Ashok Kumar et al. (eds.), Multidisciplinary Perspectives in Advanced Computing and Technology, DMPedia Lecture Notes in Multidisciplinary Research. ISBN: 978-81-993813-5-3.

अपना कर स्त्री की दशा को अपनी कविताओं में बांधने का प्रयास किया है। अनामिका की कविताएँ उद्वेलित करती है, उत्तेजित नहीं। अनामिका का स्त्रीवाद स्त्री – पुरुष समानता को समझाने बुझाने वाला स्त्रीवाद है। प्रतिशोध लेने वाला नेस्तानाबूत करने वाला स्त्रीवाद नहीं है। बहुत मुलायम और गहरी अर्थसम्पृक्ति के साथ अनामिका की कवितायें पाठकों के मन -विचार पर अपना असर डाल देती है। अनामिका की कविताओं में स्त्री संसार अत्यंत समृद्ध और आज़ाद है।उनकी कविताओं में स्त्री शोषण पीड़ा का वृत्तांत है तो उनसे उबार की नसीहतें भी है।

''लोग मिले-पर कैसे-कैसे

ज्ञानी नहीं, पंडिताऊ

वफ़ादार नहीं, दुमहिलाऊ

साहसी नहीं, केवल झगड़ालू

दृढ़ प्रतिज्ञ कहाँ, केवल जिद्दी

प्रभावी नहीं, सिर्फ हावी

दोस्त नहीं, मालिक

सामाजिक नहीं, एकांत भीरू

धार्मिक नहीं, केवल कट्टर।''

अनामिका की ये कविता की पंक्तियाँ इतने गहरे अर्थ खोलती हैं कि साधारण शब्द भी एक अव्यक्त अर्थ के रूप में दुनिया के कई गहरे अर्थ छिपाते हैं। अनामिका हमारे समय की अत्यंत सशक्त कवयित्री हैं। वह जब कविताओं का पाठ करता है तो इंसानों की दुनिया एकाएक हर तरफ से खूबसूरत होती है। अनामिका अपनी कविता में तनाव वाली बातें भी सहजता से कह पाती हैं और स्वयं को भी मुक्त रखती हैं जो एक कवयित्री के लिए आसान नहीं है। अनामिका निरंतर अपने लेखन से पितृसत्ता की परत दर परत उघाड़ती चलती हैं पर पुरुषों के प्रति वह कभी निमर्म नहीं होती। कविता और उसके मुद्दों पर अनामिका स्वयं कहती हैं कि- ''कविता कोई मुद्दा लेकर नहीं चलती। वह अपनी मौज में उमड़ पड़ती है, ठीक वैसे ही जैसे नदी अपनी नैसर्गिक रवानी में बह निकलती है। वह इसलिए नहीं बहती कि उसके तट पर सभ्यताएँ बसें, पर यह भी एक बड़ा सच है कि उसके तट पर सभ्यताएँ बस ही जाती हैं।

उनकी स्त्री अपने संसार के रचाव-बसाव में मगन होना जानती है पर वह स्वयं को ईधन बनाकर चूल्हे में झोंक दे ऐसी भी 'पगली' नहीं होना चाहती। कहने-सुनने की एक पद्धति तय करना चाहती है। ताकि उसको भी बेअंजादी से नज़र अंदाज न किया जा सके। अनामिका कहती हैं-

"सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस्स ठुँसी हुई बस में।
सुनो, हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है।
नयी-नयी सीखी हुई भाषा।"

उनकी कविता में ज्ञान, तर्क, बुद्धि, विवेक को करूणा, ममता, मनुष्यता से भिन्न कर के नहीं देखा जा सकता। वह अपनी कविता में मातृत्व के पद को अपनी कविता के माध्यम से और ऊपर उठा देती है-

"इस गुलघुल बच्चे की तरह
गुटुर- गुटुर दूध पिया होगा उन्होंने
खुद दूध मलाई उठाकर,
खुद पोंछ ली होगी नाक कभी स्वेटर से
माँ को कहीं काम में मग्न पाकर।"

'गपशप', 'बात-चीत', कहना और सुनना सभी प्रक्रियाएँ सहज करके ही वह मनुष्य के, स्त्री के सुख-दुःख की साझेदार हो सकती है। अनामिका को इस सहज साझेदारी पर ही बहुत विश्वास है। उनकी भाषा में असंख्य भूले-बिसरे शब्दों के टुकड़े हैं। कहावते-मुहावरें हैं। भाषा की यह सजीवता यह जीवंतता ही उनके काव्य को अनूठा बनाती है। संवाद धर्मिता क़ायम करना और हमेशा क़ायम रखने की चाह अनामिका के शब्दों में प्राण फूँक देती हैं। उनकी कविताओं में किसी के लिए 'घृणा' नहीं है पितृसत्ता के लिए भी नहीं। अनामिका खरी-खरी तो सुनाती है लेकिन 'खरी-खोटी' कभी नहीं सुनाती। उनकी बेशुमार कविताओं में आपको उनकी हाज़िर ज़वाबी का कौशल देखने को मिल सकता है। अनामिका के पास चुभती भाषा के नश्तर नहीं हैं। उनके पास एक समझ है जो समझा सकती है सही-गलत, उचित-अनुचित का नीर-क्षीर विवेक दे सकती है। वह मानती हैं कि हर व्यक्ति में चाहे वह कितना भी बुरा हो कुछ तो ऐसा होता ही है जिससे प्रेम किया जा सके।

2. समकालीन युग में कात्यायिनी की हिंदी कविताओं का स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवाद एवं नारी शशक्तिकरण में प्रभाव:

कात्यायनी की प्रतिबद्धता और प्रतिपक्ष उनके जीवन और उनकी कविताओं में अभिव्यक्त होता है। उनका स्वर प्रतिरोध का स्वर है। स्वयं उनके शब्दों में— "कवि को कभी-कभी लड़ना भी होता है, बंदूक़ भी उठानी पड़ती है और फ़ौरी तौर पर कविता के ख़िलाफ़ लगने वाले कुछ फ़ैसले भी लेने पड़ते हैं। ऐसे दौर आते रहे हैं और आगे भी आएँगे।" समकालीन स्त्री कविता में राजनीति की बात करते ही कात्यायनी का नाम सबसे पहले ध्यान में आता है। कात्यायनी की कविताएँ राजनीति से प्रेरित हैं। जिसमें बदलाव, विद्रोह और विद्रोह को सशक्त रूप से प्रदर्शित किया गया है। कात्यायनी की कविता की पहचान प्रखर राजनीतिक चेतना से ही बनती है।

कात्यायनी की कविता अपनी क्रांति धर्म चेतना के कारण राजनीतिक कविता का एक अलग प्रतिमान उपस्थित करती है। परिवर्तन का सपना उनकी कविताएं और उनकी आंखों में समां रूप से जीवंत होकर धड़कता है। कात्यायनी जीवन के तमाम निजी और सामाजिक प्रश्नों का अनावरन कर उनकी दुखती रगों को पकड़ती है। देश की राजनीति से लेकर कविता की राजनीति तक कात्यायनी अपने विचारों और आग्रहों के साथ एक स्थिति लेती हैं। उनकी काव्यात्मक संवेदना एक अन्य धरातल पर अपनी उपस्थति दर्ज कराती है।

उन्होंने 2002 में हुई गुजरात हिंसा के विरोध में अनेक कविताएँ लिख कर अपना विरोध प्रदर्शित किया। वे मानती हैं कि ये उन्हें राजनीतिक दृष्टि से नहीं बल्कि एक कवि की नैतिक जिम्मेवारी का निर्वाह करते हुए लिखा। उनकी कविताओं में बहुत सी रचनाएँ ऐसी हैं जो उसका समय हुई हिंसा का ब्यौरा देती है।

धुआं और राख और अधजली लाशें

और बलातक्रत स्त्रीयों - बच्चों और चीर दिये गर्भों

और टुकड़े-टुकड़े कर दिए शिशु शरीरों के बीच

कुचल दी गई मानवता, चूर कर दिए गए विवेक और

दफ़न की गई सच्चाई के बीच

संस्कृति और विचारो के ध्वंसाव शेषों में

कुछ हेरते भटकते

रुदन नहीं सिसकी की तरह

उम्मीद रक्त से रूंधे गले से

बस निकल पड़ते हैं नाजिम हिकमत के ये शब्द

"आह मेरे लोगो"

कात्यायनी धार्मिक ग्रंथो में वर्णित संकुचित सोच पर भी प्रहार करती है जिसने स्त्री को कभी बाराबरी का दरजा नहीं दिया। कात्यायनी दया की भीख माँगने में विश्वास नहीं, बल्कि वह चाहती है आजीवन संघर्ष।

3. निष्कर्ष:

अनामिका ऐसी वेगवान, प्रबुद्ध, स्नेहिल कवयित्री हैं जिन्होंने 'स्त्री-कविता' को एक अलग उर्वरता प्रदान की है। लोक से जुड़कर अपनी कविताओं को सबसे जोड़ पाने में वह अत्यंत सफल रही हैं। संवाद धर्मिता क़ायम करना और हमेशा क़ायम रखने की चाह अनामिका के शब्दों में प्राण फूँक देती हैं। उनके यहाँ 'फुस-फुसाहट के कम ही अवसर हैं। अनामिका की कविताओं में अतीत वर्तमान की आवाजाही लगी रहती है। यह अनामिका की ही कविताओं का लोक है कि 'सीता' और 'रावण' भी एक-दूसरे से संवाद करने को प्रस्तुत है। उनके यहाँ तमाम विचारक, समाज-सुधारक स्वयं 'स्त्री' से मिलने आते हैं।

वहीं कात्यायनी की कविता पूजीवाद, फासीवाद और सांप्रदायिक ताकतों के संगठन पर अक्रमक प्रहार करती है और यह स्वर स्त्री कविता में अत्यंत सार्थक है। समकालीन कविता के परिद्रश्य से ऐसे स्वर लगभाग लुप्त से हो गए हैं इसके बावज़ूद भी कात्यायनी अपनी कविता में इसे जीवत रख सक पाती है।

संदर्भ :

- अनब्याही औरतें, अनामिका, कविता कोश से साभार
- स्त्री कविता-पहचान और द्वंद्व (भाग-दो) लेखिका- रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन-67
- स्त्री मुक्ति : साझा चूल्हा- अनामिका, एन.बी.टी., प्रकाशन, पृ.12
- स्त्री-कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राज कमल प्रकाशन, पृ. 99
- स्त्री-कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राज कमल प्रकाशन, पृ. 100
- स्त्री-कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राज कमल प्रकाशन, पृ.99
- स्त्री- कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राज कमल प्रकाशन, पृ.101
- स्त्री मुक्ति : साझा चूल्हा, अनामिका, एन.वी.टी. प्रकाशन, पृ.19
- स्त्रियाँ (कविता), अनामिका, कविता कोश से साभार
- स्त्री कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन, पृ.113

- दलाईलामा (कविता)- अनामिका, कविता कोश से साभार
- स्त्री- कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), लेखिका रेखा सेठी, राज कमल प्रकाशन, पृ. 104
- 'प्रेम के लिए फाँसी' ऑन आनर किलिंग' (कविता)- अनामिका, कविता कोश, साभार
- प्रेम के लिए फाँसी' ऑन आनर किलिंग' (कविता)- अनामिका, कविता कोश, साभार
- स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष : अनामिका, वाणी प्रकाशन, पृ.221
- स्त्री की दुनिया- मधुरेश, नयी किताब प्रकाशन दिल्ली, पृ.23
- मन माँजने की जरूरत (कविता)- अनामिका, पृ.42
- स्त्री कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक) लेखिका, रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन, पृ.109
- स्त्री विमर्श का लोपक्ष- अनामिका, वाणी प्रकाशन, पृ.29
- स्त्री कविता : पक्ष और परिप्रेक्ष्य (भाग-एक), रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन, पृ.121
- तिलोत्तमा थेरी : टोकरी में दिगंत- अनामिका
- अनामिका : दिगंत नापने वाली कवयित्री - डॉ. प्रियदर्शिनी, अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati), चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका, अंक-48, जुलाई-सितम्बर 2023
- कात्यायनी, कुछ जीवंत, कुछ ज्वलन्त, पृ. १४३
- कात्यायनी, हॉकी खेलती लड़कियां, सात भाईयों के बीच चंपा, पृ. २०
- कात्यायनी, सात भाईयों बीच चंपा, पृ. २१-२२
- डॉ. संतोष वसंत केलकर, समकालीन हिंदी स्त्री कविता में स्त्री विमर्श